

डॉ. डेव मैथ्यूसन, उनका आगमन कहां है? सत्र 4, जनरल ई पिस्तल्स और रहस्योद्घाटन में पारूसिया का विलंब

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड मैथ्यूसन द्वारा इस प्रश्न पर दिए गए उनके शिक्षण में है, उनका आगमन कहां है? सत्र 4, सामान्य पत्रों और रहस्योद्घाटन में पारूसिया का विलंब।

तो, हम नए नियम में उस खंड को देख रहे हैं, जिसे अक्सर सामान्य पत्र कहा जाता है, और हमने पिछले सत्र में 2 पतरस 3 पर काफी समय बिताया, जो कि हमारे द्वारा देखे गए कुछ अन्य अंशों से थोड़ा अलग है। अधिकांश पाठ ऐसे हैं जो मसीह की शीघ्र वापसी, या मसीह की वापसी की आशा करते हैं जिसे लेखकों, या यीशु, और पहली सदी के श्रोताओं और पाठकों के जीवनकाल में लिया जा सकता है।

जल्दबाज़ी के मुद्दे के बजाय देरी के मुद्दे को संबोधित करता है। और वह यह है कि मसीह वापस क्यों नहीं आया? और इसलिए देरी की समस्या कोई आधुनिक समस्या नहीं है, बल्कि पहली सदी के अंत में, पहली सदी में ही देरी का मुद्दा पहले से ही समस्याएँ पैदा कर रहा था। और इसलिए 2 पतरस झूठे शिक्षकों और उन सवालियों की एक श्रृंखला को संबोधित करता है जो उन्होंने उठाए थे कि मसीह वापस क्यों नहीं आया।

उसके आने का वादा कहां है? और हमने देखा कि 2 पतरस 3 इसका उत्तर यह कहकर देता है कि, सबसे पहले, परमेश्वर उसी दृष्टिकोण से देरी को नहीं देखता है जिस दृष्टिकोण से हम देखते हैं। हम अपने सीमित, सीमित मानवीय दृष्टिकोण और लगभग 60, 70, 80 वर्ष या उससे अधिक के जीवनकाल के दृष्टिकोण से देरी को देखते हैं, जहाँ परमेश्वर समय को शुरू से अंत तक उसकी संपूर्णता में देखता है। इसलिए, जो हमारे लिए असहनीय देरी प्रतीत होती है, वह उसके लिए नहीं है।

और फिर हमने देखा कि परमेश्वर मानवता को पश्चाताप करने का मौका देने में भी देरी करता है। तो शायद यह नए नियम में देरी के लिए सबसे पूर्ण प्रतिक्रिया और धार्मिक तर्क है। अब, ऐसे कई अन्य पाठ हैं जिन्हें हम सामान्य पत्रों में देख सकते हैं, इब्रानियों से 3 यूहन्ना तक, और हम प्रकाशितवाक्य को अकेले ही देखेंगे।

लेकिन हम सामान्य पत्रों से तीन खास पाठों की जाँच करेंगे, याकूब 5:8, और 1 पतरस 4:7, और फिर 1 यूहन्ना 2:17, और 18। एक और पाठ जिसे हम देख सकते हैं वह है इब्रानियों 10:25, और कुछ अन्य भी हैं, लेकिन हम उन तीन पाठों पर ध्यान केंद्रित करेंगे। तो सबसे पहले, याकूब 5:8। याकूब 5:8 मसीहियों को धैर्य रखने का आह्वान करता है क्योंकि आने वाला, या यूनानी शब्द पारूसिया है, प्रभु का आगमन निकट है या निकट आ रहा है।

यह पाठ याकूब 5:1 से 11 में गरीब दिहाड़ी मजदूरों के बारे में व्यापक संदर्भ में पाया जाता है जो न्याय के लिए रो रहे हैं और जो इसलिए हैं क्योंकि वे अत्याचारी, धनी ज़मींदारों के हाथों पीड़ित हैं जो उनकी मजदूरी रोक रहे हैं। और जब आप 5 :1 से 11 पढ़ते हैं, तो यह आपके लिए उस दृश्य को सेट करता है। और याकूब की इन पीड़ित दिहाड़ी मजदूरों, इन गरीब ईसाइयों को आज्ञा है कि सबसे पहले, वे प्रभु के आने तक, या फिर, पारूसिया, उस यूनानी शब्द पारूसिया, तक प्रतीक्षा करें।

और वह उन्हें याद दिलाता है कि प्रभु का आगमन निकट है। वह द्वार पर खड़े न्यायाधीशों की भाषा का उपयोग करता है, जो एक स्थानिक छवि भी है, न कि केवल एक लौकिक, बल्कि एक स्थानिक, कि आगमन स्थानिक रूप से निकट है और किसी भी क्षण में टूटने के लिए तैयार है। और इसलिए हम एक बार फिर पूछ सकते हैं, याकूब अध्याय 5 और पद 8 में प्रभु का आगमन किस अर्थ में निकट है? किस अर्थ में यीशु इतिहास में टूटने वाला है और धनी उत्पीड़कों का न्याय करने वाला है? क्या याकूब गलत था? क्या वह भविष्यवाणी कर रहा था कि यह उसके जीवनकाल में होगा, और फिर वह गलत था? क्या वह गलत था? मुझे लगता है, हालांकि कुछ लोगों ने सुझाव दिया है, कि याकूब वास्तव में 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश का उल्लेख कर रहा है, और निश्चित रूप से यह एक संभावना है, और यह याकूब द्वारा दूसरे आगमन या दुनिया के अंत की भविष्यवाणी करने की समस्या को कम करेगा, और ऐसा कभी नहीं हुआ।

पारूसिया भाषा में दरवाजे पर खड़े यीशु और एक न्यायाधीश के रूप में आने की जेम्स की भाषा, धर्मशास्त्रियों द्वारा मसीह के दूसरे आगमन को संदर्भित करती है। इसलिए, जेम्स पाठकों को धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता का उल्लेख करते हुए प्रतीत होते हैं क्योंकि यीशु का दूसरा आगमन, फिर से, वह भाषा नहीं है जिसका जेम्स उपयोग करता है, दूसरा आगमन, लेकिन यह हमारी धर्मशास्त्रीय शब्दावली है जो इसे यीशु के जन्म और मृत्यु और पुनरुत्थान के समय के पहले आगमन से अलग करती है, लेकिन मसीह का दूसरा आगमन न्याय लाने के लिए, और विशेष रूप से इस संदर्भ में, उन दुष्ट उत्पीड़कों का न्याय। तो, किस अर्थ में, यीशु निकट आ रहे थे? बस बहुत संक्षेप में, मुझे लगता है कि हमें बस इतना कहना है, या मैं बस इतना कहना चाहता हूँ, कि हमें संभवतः जेम्स को उसी दृष्टिकोण से पढ़ना चाहिए जैसा कि हमने अन्य नए नियम के लेखकों को पढ़ा है, कि मसीह के पहले आगमन पर, उन्होंने पहले से ही अंत समय का उद्घाटन किया है।

मसीह के प्रथम आगमन के साथ मृत्यु और पुनरुत्थान के रूप में अंत का उद्घाटन पहले ही हो चुका है। हमने सुसमाचारों में देखा कि यीशु ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा वादा किए गए परमेश्वर के अंतिम समय के राज्य का पहले ही उद्घाटन कर दिया है, और इसलिए उसका दूसरा आगमन किसी भी समय हो सकता है ताकि अंत समय की उस अवधि को समाप्त किया जा सके। इसलिए, पौलुस और अन्य नए नियम के लेखकों की तरह, याकूब और उसके पाठक इस उम्मीद के साथ जीते हैं कि मसीह बहुत जल्द वापस आ सकता है।

मसीह किसी भी समय वापस आ सकते हैं क्योंकि वे पहले से ही अंत में हैं, और वे केवल उस अंत के समापन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब मसीह न्यायाधीश के रूप में आएंगे। इसलिए, मसीह पहले

से ही आ रहे हैं और समय और स्थान दोनों के हिसाब से दरवाजे पर खड़े हैं, और इसलिए इतिहास में टूटने का इंतजार कर रहे हैं ताकि उनके पाठकों को धैर्य के साथ प्रतिक्रिया करने के लिए कहा जाए। मसीह किसी भी समय न्याय लाने के लिए वापस आ सकते हैं, इसलिए पाठकों को बदला लेने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, और इसके बजाय, उन्हें प्रभु के आने का धैर्यपूर्वक इंतजार करना चाहिए।

तो, जेम्स अध्याय 5, नंबर एक को सारांशित करने के लिए, जेम्स इसी तनाव के भीतर काम कर रहा है जो पहले से ही हो चुका है और जो अभी तक नहीं आया है। अंत पहले से ही शुरू हो चुका है, और इसलिए, मसीह का दूसरा आगमन किसी भी समय हो सकता है। यह जल्द ही होने वाला है।

और फिर दूसरा, याकूब इसे ईश्वरीय जीवन जीने की प्रेरणा के रूप में उपयोग करता है, अंत की भविष्यवाणी करने के लिए नहीं, यह भविष्यवाणी करने के लिए नहीं कि यीशु उनके जीवनकाल में वापस आने वाला है, और फिर वह गलत था। हालाँकि, याकूब मसीह की जल्द वापसी, इस तथ्य का उपयोग करता है कि मसीह किसी भी समय वापस आ सकता है, अपने पाठकों के लिए पवित्र जीवन को जिम्मेदारी से जीने के लिए एक नैतिक प्रेरणा के रूप में। इस मामले में, धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करना, अपने उत्पीड़कों से बदला नहीं लेना, और धैर्यपूर्वक मसीह न्यायाधीश के इतिहास में प्रवेश करने और न्याय लाने की प्रतीक्षा करना।

अगला पाठ जिसे हम बहुत ही संक्षेप में देखना चाहते हैं, वह है 1 पतरस 4:7, जहाँ 1 पतरस 4:7 में, पतरस ने कहा, समय आ गया है, या सभी चीजों का अंत निकट है। और फिर, पहली नज़र में, यह अंत की भविष्यवाणी जैसा लगता है। क्या पतरस अंत की भविष्यवाणी कर रहा था, और फिर वह गलत था? क्या पतरस यह भविष्यवाणी कर रहा था कि यीशु उसके और उसके पाठकों के जीवनकाल में वापस आ रहा है, लेकिन फिर वह पूरी तरह से गलत था? संक्षेप में संक्षेप में कहें तो, सबसे पहले, मैं सोचता हूँ कि याकूब 5.8 की तरह, और पौलुस के पत्रों की तरह, और यहाँ तक कि यीशु के जल्द ही वापस आने के कई कथनों की तरह, हमें 1 पतरस को उसी दृष्टिकोण से समझने की ज़रूरत है, जैसा कि अन्य नए नियम के लेखकों ने किया है।

उन्हें उम्मीद थी कि मसीह जल्द ही वापस आएँगे। उन्हें उम्मीद थी कि मसीह किसी भी समय वापस आ सकते हैं क्योंकि उन्होंने पहले ही अंत समय का उद्घाटन कर दिया था। वे पहले से ही अंत में थे।

वे पहले से ही पिछले कुछ दिनों में जी रहे थे। उन्हें पहले से ही समय को उस संकुचित दृष्टिकोण से देखना था जिसके बारे में पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 7 में बात की थी। और इसलिए, उस दृष्टिकोण से, मसीह किसी भी समय वापस आ सकता है। उन्हें समय को इस तथ्य से देखने की ज़रूरत थी कि अंत समय मसीह के दूसरे आगमन के साथ किसी भी क्षण समाप्त हो सकता है।

लेकिन पतरस यह भविष्यवाणी करने में विफल रहता है कि यह कब घटित होगा या यह उसके जीवनकाल में या उसके पाठकों के जीवनकाल में घटित होना है। और फिर दूसरा, याकूब 5 और पौलुस और अन्य नए नियम के लेखकों की तरह, पतरस मसीह की शीघ्र वापसी के इस दृष्टिकोण

का उपयोग करता है, यह तथ्य कि मसीह किसी भी समय वापस आ सकता है, अपने पाठकों के भीतर नैतिक आग्रह को जगाने के लिए, अंत की भविष्यवाणी करने के लिए नहीं, यह भविष्यवाणी करने के लिए नहीं कि मसीह वास्तव में उनके जीवनकाल में वापस आएगा, और फिर पतरस गलत था। लेकिन इसके बजाय, उसके पाठकों के पास हमेशा सतर्क रहने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

यदि वे नहीं जानते कि मसीह कब वापस आ रहे हैं, यदि मसीह किसी भी समय वापस आ सकते हैं, तो उनके पास सतर्क रहने और जिस संदर्भ में वे खुद को पाते हैं, उसमें ईश्वरीय और पवित्र जीवन जीने के द्वारा सतर्क रहने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है। यदि पाठकों को पता होता कि मसीह कल वापस आने वाले हैं, या यदि उन्हें यह तथ्य पता होता कि वे 10, 20, 100 वर्ष, 1,000 वर्ष या 2,000 वर्ष विलंबित होने वाले हैं, तो जाहिर है कि उन्होंने अपने जीवन की योजना उसी के अनुसार बनाई होती। लेकिन चूंकि वे नहीं जानते, चूंकि मसीह किसी भी समय वापस आ सकते हैं, जेम्स की कल्पना का उपयोग करने के लिए, चूंकि वे पहले से ही दरवाजे पर खड़े हैं, इसका मतलब है कि पाठकों को उस तरह के जीवन जीने के लिए तत्परता से प्रतिक्रिया करनी चाहिए जैसा कि पतरस उन्हें पूरे पत्र में जीने के लिए कहता है।

तो एक बार फिर, 1 पतरस 4.7, हालाँकि पहली नज़र में ऐसा लग सकता है कि पतरस ने सोचा था कि जब वह कहता है कि सभी चीज़ों का अंत निकट है, तो अंत उसके जीवनकाल में होने वाला था, वह बस उसी दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित कर रहा है जो अन्य नए नियम के लेखक पहले से ही अंत में जीने और यह उम्मीद करने के बारे में करते हैं कि मसीह किसी भी समय वापस आ सकता है, यह भविष्यवाणी नहीं करता कि वह वापस आएगा या वह कब वापस आएगा। अगला पाठ जिसे मैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर आगे बढ़ने से पहले बहुत संक्षेप में देखना चाहता हूँ, वह है 1 यूहन्ना 2.18, और मैं दोनों आयतों 17 और 18 पढ़ूँगा। 1 यूहन्ना में, हम इन शब्दों को पढ़ते हैं, और संसार अपनी अभिलाषाओं सहित मिटता जाता है, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।

और फिर, श्लोक 18 में, बच्चों, यह अंतिम समय है। और जैसा कि आपने सुना है कि मसीह विरोधी आ रहा है, अब भी, कई मसीह विरोधी आ चुके हैं। इससे, हम जानते हैं कि यह अंतिम समय है।

उस अंतिम श्लोक को संक्षेप में कहें तो, थोड़ा सा ध्यान देने योग्य है कि जॉन को यकीन है कि अंत समय पहले ही आ चुका है। मैं इस बारे में विस्तार से नहीं बताना चाहता कि मसीह विरोधी कौन है और जॉन को क्या लगता है कि वह क्या हो सकता है, लेकिन ध्यान दें कि वह मसीह विरोधी को किसी ऐसे व्यक्ति या चीज़ के रूप में देखता है जिसे भविष्य में आना है, फिर भी वह आश्चर्य है कि यह पहले ही आ चुका है, कई मसीह विरोधी पहले ही यह प्रदर्शित करते हुए आ चुके हैं कि अंत पहले ही हो चुका है। जॉन, सभी चीज़ों के अंत या अंतिम दिनों या उस जैसी किसी चीज़ या मसीह के आगमन की भाषा का उपयोग करने के बजाय, अंतिम घंटे की भाषा का उपयोग करता है। इसलिए, सबसे अधिक संभावना है कि अंतिम घंटा अंत समय को संदर्भित करता है जो मसीह के पहले आगमन के साथ पहले ही आरंभ हो चुका है।

जॉन को यकीन है कि वे पहले से ही अंतिम समय में जी रहे हैं। वे पहले से ही अंतिम समय में जी रहे हैं, यह इस तथ्य से प्रदर्शित होता है कि कई मसीह विरोधी मसीह के विरोधी थे और संभवतः जॉन के दिनों में झूठी शिक्षा के रूप में, यह तथ्य कि झूठे शिक्षक एक अलग सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे और यीशु मसीह के सच्चे सुसमाचार को कमजोर कर रहे थे, यीशु मसीह और उनके लोगों का विरोध कर रहे थे, यह एक प्रदर्शन या सबूत था कि अंत समय, वह अंतिम समय, पहले से ही उसी तरह शुरू हो चुका था जैसा कि यीशु ने कहा था कि परमेश्वर का राज्य पहले से ही शुरू हो चुका है, यहाँ तक कि इसके अंतिम भविष्य के प्रकटीकरण से भी पहले। तो, अंतिम समय पहले से ही शुरू हो चुका है।

यूहन्ना और उसके पाठक पहले से ही अंत के समय में रह रहे थे, और इसीलिए, यूहन्ना कह सकता है कि दुनिया और उसकी इच्छाएँ खत्म हो रही हैं। क्यों? क्योंकि अंत के समय का राज्य पहले ही आ चुका है। अंत के समय, फिर से, पुराने नियम में, अंत के समय का मतलब था इस व्यवस्था का विघटन, इस व्यवस्था का विनाश, और मसीह के शत्रु एक नई सृष्टि के लिए रास्ता बनाने के लिए जगह लेंगे।

अब, यूहन्ना देखता है कि यह प्रक्रिया पहले से ही हो रही है क्योंकि अंतिम समय आ गया है, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी किया गया अंतिम समय। चूँकि अंतिम समय पहले से ही आ चुका है, इसका मतलब यह होना चाहिए कि यह वर्तमान दुनिया, जो बुराई, धोखे और पाप से भरी हुई है, अब समाप्त होने की प्रक्रिया में है। आप देखेंगे कि यूहन्ना यह नहीं कहता कि यह कब तक चलेगा, यह कहकर कि हम अंतिम समय में हैं।

वह यह संकेत नहीं देता कि अंत कितना निकट है। वह यह भविष्यवाणी नहीं करता कि मसीह कब वापस आएगा। वह यह भविष्यवाणी नहीं करता कि वह अंतिम घड़ी कितनी देर तक जारी रहेगी।

वह केवल इतना जानता है कि मसीह के प्रथम आगमन, मसीह के प्रथम आगमन, उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के कारण, वह अंतिम घड़ी, वह अंतिम समय, सभी चीजों का अंत, पहले ही आ चुका है। और वह केवल उस भाग का इंतजार कर रहा है जो अभी तक नहीं हुआ है, मसीह का दूसरा आगमन इतिहास को उसके निष्कर्ष पर ले जाएगा। और एक बार फिर ध्यान दें, अन्य नए नियम के लेखकों की तरह, कि यूहन्ना नैतिक तात्कालिकता के लिए इस दृष्टिकोण का उपयोग करता है।

यदि आप आस-पास की आयतें पढ़ें, तो वह अपने पाठकों से उचित प्रतिक्रिया देने, धोखे से बचने, झूठे शिक्षकों से दूर रहने और पवित्र जीवन जीने का आह्वान कर रहा है। आप 1 यूहन्ना की पूरी किताब के बाकी हिस्से को पढ़ें, वह उनसे एक-दूसरे से प्रेम करने और यीशु की आज्ञाओं और ऐसी ही अन्य बातों का पालन करने के लिए कहता है। इसलिए, यूहन्ना अंत की भविष्यवाणी करने में दिलचस्पी नहीं रखता है।

यूहन्ना कोई आधुनिक समय का भविष्यवाणी गुरु नहीं है जो संकेतों को पढ़ता है और भविष्यवाणी करता है कि अंत कितना करीब है और यीशु कब वापस आने वाला है। लेकिन

इसके बजाय, यूहन्ना मसीह की जल्द वापसी और इस तथ्य के इस दृष्टिकोण का उपयोग करता है कि वे पहले से ही अंत में हैं, अंतिम घड़ी, जिसका अर्थ है कि यह वर्तमान दुनिया समाप्त हो जानी चाहिए। वह इसका उपयोग उन्हें इस दुनिया की इच्छाओं और उन चीजों से बचने में मदद करने के लिए करता है जिन्हें दुनिया महत्व देती है।

तो एक बार फिर, सामान्य पत्रों में ऐसा कुछ नहीं है, और ऐसे अन्य ग्रंथ हैं जिन पर हम विचार कर सकते थे। मैंने केवल तीन पर ध्यान केंद्रित किया है जो मुझे लगता है कि इस तरह के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुझे लगता है कि इन तीन ग्रंथों में इस तरह की व्याख्या ही दूसरों को भी समझाती है।

लेकिन इन अंशों में से कुछ भी विफल भविष्यवाणी का समर्थन नहीं करता है। मुझे नहीं लगता कि जॉन या जेम्स या इब्रानियों या पीटर के लेखक एक ऐसे अंत की भविष्यवाणी कर रहे हैं जो कभी नहीं आया, और इसलिए, वे गलत थे, वे गलत थे, और उन्हें अपना दृष्टिकोण या ऐसा कुछ समायोजित करना पड़ा। लेकिन इसके बजाय, वे सभी समय और अपने वर्तमान को उद्घाटन किए गए युगांतशास्त्र के दृष्टिकोण से देख रहे हैं।

इसका मतलब यह है कि अंत समय का उद्घाटन हो चुका है। वे पहले से ही अंत में हैं। वे पहले से ही अंतिम घड़ी में हैं।

यह वर्तमान दुनिया पहले से ही खत्म हो रही है। और इससे उन्हें नैतिक और नैतिक रूप से अपने दृष्टिकोण को आकार देना चाहिए। इससे उन्हें अपने जीवन जीने के तरीके में तत्परता मिलनी चाहिए।

क्योंकि वे पहले से ही अंत में हैं, मसीह किसी भी समय वापस आ सकते हैं। ऐसा नहीं है कि उन्हें ऐसा करना ही है। लेखक यह भविष्यवाणी नहीं करते कि वे ऐसा करेंगे।

और फिर वे गलत थे। लेकिन मसीह किसी भी समय वापस आ सकता है। उस दृष्टिकोण को यह तय करना चाहिए कि बाइबल के लेखक और उनके पाठक दुनिया को कैसे देखते हैं, वे कैसे प्रतिक्रिया देते हैं, और वे अपना जीवन कैसे जीते हैं।

तो, हमने सुसमाचारों को देखा है, और हमने देखा है कि यीशु ने जो कुछ भी कहा है, वह मेरे विचार से, इस राय का समर्थन नहीं करता है कि यीशु ने सोचा था कि अंत-समय का राज्य उसके जीवनकाल में आएगा। और फिर वह गलत था। वह गलत था।

हमने देखा कि कई ग्रंथों में, यीशु शायद अंत-समय के राज्य का उल्लेख नहीं कर रहे थे, बल्कि राज्य के उद्घाटन का उल्लेख कर रहे थे। लेकिन जब भी वह अंत-समय के राज्य में अपनी जल्द वापसी का उल्लेख करते हैं, तो यह सिर्फ इसलिए होता है क्योंकि अंत का उद्घाटन पहले ही हो चुका था, इसलिए अंत के समय का उद्घाटन यीशु की सेवकाई के साथ पहले ही हो चुका था। चूंकि अंत-समय का राज्य पहले से ही एक मौजूदा वास्तविकता था, इसलिए इसका समापन किसी भी समय हो सकता है।

ताकि यीशु यह वादा कर सके कि वह जल्द ही आएगा, बिना यह बताए कि वह कब वापस आएगा। हमने प्रेरितों के काम और पौलुस के लेखन में भी यही दृष्टिकोण देखा। उन ग्रंथों में ऐसा कुछ भी नहीं था जो यह साबित करता हो कि पौलुस ने अंत की भविष्यवाणी की थी और इसलिए वह गलत था।

लेकिन यीशु की तरह, उसने समय को एक अलग नज़रिए से देखा। अंत समय की शुरुआत पहले ही हो चुकी थी। वह पहले से ही अंत में जी रहा था, इसलिए मसीह किसी भी समय वापस आकर उसे समाप्त कर सकता था।

और उन्होंने देखा कि समय अब संकुचित और छोटा हो गया है, इसलिए जीवन को जिम्मेदारी से जीने की तत्काल आवश्यकता है। लेकिन हमने यह भी देखा कि, प्रेरितों के काम की पुस्तक, प्रेरितों के काम की पूरी योजना और 2 थिस्सलुनीकियों जैसे कुछ ग्रंथों की तुलना में भी, नए नियम ने संकेत दिया कि कुछ देरी हो सकती है। नए नियम में देरी के लिए प्रावधान किए गए थे, इसलिए यह असंभव है कि नए नियम के लेखक यह भविष्यवाणी कर रहे थे कि मसीह तुरंत वापस आ जाएगा; इसलिए, वे गलत थे।

और फिर हमने सामान्य पत्रों में ठीक उसी दृष्टिकोण को देखा, कि याकूब और पतरस और यूहन्ना ने सोचा कि वे पहले से ही अंत के समय में रह रहे थे और जानते थे कि वे पहले से ही अंत के समय में रह रहे थे। अंत का उद्घाटन पहले ही हो चुका था। इसलिए, वे भी मसीह के जल्द ही वापस आने की उस उम्मीद के साथ जी रहे थे।

यीशु किसी भी समय वापस आ सकते थे, और इसलिए, एक नैतिक तात्कालिकता थी। उन्हें उस दृष्टिकोण के प्रकाश में अपने जीवन को उचित रूप से व्यवस्थित करना था क्योंकि वे नहीं जानते थे कि मसीह कब वापस आएगा। यह हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ले आता है।

अब, प्रकाशितवाक्य एक ऐसी किताब है जिसे अक्सर युगांतशास्त्र और अंत समय की बातों के बारे में एक किताब के रूप में जाना जाता है। मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से उससे कहीं ज़्यादा है। लेकिन प्रकाशितवाक्य पूरी सृष्टि और पूरी मानवता के लिए परमेश्वर की छुटकारे की योजना के बारे में बताता है।

पारुसिया की देरी के बारे में हमारी समझ में योगदान देता है।

इसलिए, मैं इस व्याख्यान के बाकी हिस्से में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की खोज में थोड़ा समय लगाना चाहता हूँ और फिर अगले व्याख्यान में इसे समाप्त करना चाहता हूँ। लेकिन ऐसा करने से पहले, यह समझना ज़रूरी है कि प्रकाशितवाक्य किस तरह की पुस्तक है। यह उन अन्य पुस्तकों से अलग है जिन्हें हमने पढ़ा है।

रहस्योद्घाटन एक अद्वितीय प्रकार के साहित्य से संबंधित है, जिसकी आज हमारे पास कोई समानता नहीं है। रहस्योद्घाटन को सर्वनाश के रूप में जाना जाता है। इससे हमारा मतलब केवल दुनिया का अंत, सभ्यता का विनाश और ऐसी ही चीज़ों से नहीं है।

लेकिन सर्वनाश एक तरह का साहित्य था। इसमें जॉन के दर्शन दर्ज थे। जॉन को स्वर्ग का दर्शन हुआ था।

उनके पास भविष्य का एक दृष्टिकोण था। उनके पास अपने वर्तमान का एक दृष्टिकोण था। लेकिन वह दृष्टिकोण अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा में व्यक्त किया गया था।

इसलिए, जब आप रहस्योद्घाटन की पुस्तक पढ़ते हैं, तो आप पाते हैं कि यह मानव सिर और बिच्छू की पूंछ वाले टिड्डों से भरा है। यह आधा मानव और आधा जानवर है, कीट जैसा, और विचित्र प्रकार का। यह सात सिर वाले ड्रेगन और ऐसी ही चीजों से भरी एक किताब है।

क्या हो रहा है? खैर, जॉन अपने समय और भविष्य में होने वाली वास्तविक घटनाओं का उल्लेख कर रहा है, लेकिन वह उन्हें ढालता है, या वह उन्हें इस दर्शन के माध्यम से संदर्भित करता है। वह उन्हें अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा के साथ संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, मुझे विश्वास है कि जॉन और पहले पाठकों ने रहस्योद्घाटन 13 में जानवरों को रोमन साम्राज्य, सम्राट और रोमन साम्राज्य, और उन लोगों के संदर्भ में समझा होगा जो सम्राट की पूजा को बढ़ावा देने के लिए उत्सुक थे।

जॉन अपने पाठकों को इससे दूर रखने की कोशिश कर रहा है। ऐसा करने का एक तरीका रोम को उसके असली रंग में चित्रित करना है। दरअसल, रोम वास्तव में एक घिनौना सात सिर वाला जानवर है जो आपको नुकसान पहुँचाने के लिए बनाया गया है, जो उन सभी चीजों का विरोध करता है जो परमेश्वर अपने लोगों और अपनी दुनिया में करने की कोशिश कर रहा है।

और इसलिए, पाठकों को शायद वापस बैठकर इस बारे में फिर से सोचना चाहिए कि क्या वे रोम का समर्थन करना चाहते हैं और रोमन साम्राज्य के प्रति निष्ठा और आज्ञाकारिता दिखाकर अपना भाग्य आजमाना चाहते हैं। तो यह रहस्योद्घाटन का काम है। यह अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा में एक दर्शन है।

इसलिए, जब हम देखते हैं कि प्रकाशितवाक्य अंत और मसीह के आगमन के बारे में क्या कहता है, तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि हम किस तरह की किताब के साथ काम कर रहे हैं। यह एक भविष्यवाणी भी है। प्रकाशितवाक्य को भविष्यवाणी कहने से हमारा मतलब यह नहीं है कि यह सिर्फ अंत की भविष्यवाणी करता है।

यह ऐसा नहीं है कि जॉन क्रिस्टल बॉल में देख रहा है, और वह 21वीं सदी को देखता है, और फिर वह पीछे जाता है और अपने पाठकों को इसे सबसे अच्छे तरीके से समझाने की कोशिश करता है। पुराने नियम के बहुत से विद्वान भविष्यवाणी और भविष्य बताने के बीच अंतर करना पसंद करते हैं। भविष्यवाणी भविष्य की भविष्यवाणी करना है, लेकिन भविष्य बताना केवल उस श्रोता को तुरंत संदेश की घोषणा या घोषणा करना है जो इसे पढ़ रहा है, जो इसे सुन रहा है।

और अधिकांश विद्वान इस बात से आश्चर्य हैं कि पुराने नियम और नए नियम में भविष्यवाणियाँ बहुत, बहुत ज़्यादा भविष्य-कथन करती हैं। इसका मतलब यह है कि यह भविष्य की भविष्यवाणी करने से ज़्यादा वर्तमान में परमेश्वर के लोगों को आज्ञाकारिता के ज़रिए परमेश्वर के

साथ वफ़ादारी और नए सिरे से वाचा की वफ़ादारी के लिए बुलाने से ज़्यादा चिंतित है। इसलिए, जब हम प्रकाशितवाक्य को एक भविष्यवाणी के रूप में देखते हैं, तो हम इस बात में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं रखते कि यह भविष्य की भविष्यवाणी कर रहा है या नहीं।

प्रकाशितवाक्य में ऐसा ही है, खास तौर पर जब आप पुस्तक के अंतिम कुछ अध्यायों को पढ़ते हैं। जॉन इतिहास के बिल्कुल अंत में है, मसीह का दूसरा आगमन, मुझे लगता है। लेकिन फिर भी, इसका उद्देश्य हमें केवल यह बताना नहीं है कि अंतिम समय कैसा होगा और हमारी जिज्ञासा को संतुष्ट करना है कि मसीह कब वापस आएगा और क्या होगा और वह कैसा दिखेगा। लेकिन फिर भी, जॉन अभी भी भविष्य बताने में लगा हुआ है।

वह अपने पाठकों को एक संदेश दे रहा है। वह उन्हें यीशु मसीह के प्रति वफ़ादार रहने के लिए कहता है, तब भी जब वह भविष्य का ज़िक्र करता है। मुझे भी यकीन है कि जॉन और उसके पाठक समझ गए होंगे कि इस किताब में क्या चल रहा था।

यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रकाशितवाक्य केवल उन घटनाओं का उल्लेख नहीं करता है जिन्हें हम अचानक समझ सकते हैं, और जॉन और उसके पाठकों को पता नहीं था कि क्या हो रहा था। हाल ही में किसी ने मुझे बताया कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अपने मूल पाठकों को भ्रमित करने के लिए लिखी गई थी, और अब हम इसे समझते हैं। और मैंने मूल रूप से कहा, वास्तव में इसका ठीक उल्टा सच है।

अगर कोई इस पुस्तक के बारे में भ्रमित है, तो वह हम हैं। इसलिए नहीं कि यह एक भ्रमित करने वाली पुस्तक है, बल्कि इसलिए कि इसे पहले पाठकों द्वारा समझा जाना था। अध्याय 1 और पद 3 में, यूहन्ना अपने पाठकों से उन लोगों के लिए आशीर्वाद देने के लिए कहता है जो इसे पढ़ते हैं और इसे पूरी पुस्तक के रूप में रखते हैं।

मेरा जवाब है, जॉन अपने पाठकों से यह कैसे उम्मीद कर सकता है कि वे इसे रखें और इसका पालन करें? इसे रखने से उसका मतलब है कि इसका पालन करें। जॉन अपने पाठकों से यह कैसे उम्मीद कर सकता है कि वे एक ऐसी किताब का पालन करें जिसके बारे में उन्हें कुछ पता ही नहीं है? यह कम से कम धोखा देने वाला होगा और जॉन जो करने की कोशिश कर रहा था, उसके विपरीत होगा। और फिर, किताब के अंत में, अध्याय 22 और श्लोक 10 में, जॉन से कहा गया है कि वह किताब को सील न करे क्योंकि समय आ गया है।

किसी किताब को सीलबंद करने का मतलब है कि उसकी विषय-वस्तु को बाद की तारीख के लिए छिपाया जाए, लेकिन जॉन ने इसके ठीक विपरीत कहा है, इसे सीलबंद न करें। तो, यह एक ऐसी किताब है जो पाठकों के लिए प्रासंगिक है। यह एक ऐसी किताब है जिसे वे पहली सदी में समझ सकते थे।

यह पुस्तक पहली सदी के पाठकों के लिए समझने योग्य है। इसका उद्देश्य एक संदेश संप्रेषित करना था जो उन्हें यह समझने में मदद करेगा कि पहली सदी में क्या चल रहा था, रोमन साम्राज्य में जीवन कैसे जीया जा रहा था, और उन्हें इसका कैसे जवाब देना चाहिए, इसका उद्देश्य उन्हें अपनी दुनिया को समझने में मदद करना है। तो, उस दृष्टिकोण से, यह मसीह के शीघ्र लौटने

और देरी की संभावना के मुद्दे के बारे में क्या कहता है? खैर, हमें पुस्तक की शुरुआत में और पुस्तक के अंत में, दिलचस्प रूप से कई कथन मिलते हैं, जिन पर मैं थोड़ा समय बिताना चाहता हूँ।

अध्याय एक में, पुस्तक के परिचय में ही, मुझे लगता है, आपको कई संकेत या सुराग मिलते हैं कि यूहन्ना कैसे चाहता है कि पुस्तक को उसके पहले पाठकों द्वारा ग्रहण किया जाए और पढ़ा जाए, लेकिन जाहिर है, 21वीं सदी में और उसके पाठकों द्वारा भी। प्रकाशितवाक्य अध्याय एक, श्लोक एक में, हम यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन को पढ़ते हैं जिसे परमेश्वर ने उसे अपने सेवकों को दिखाने के लिए दिया था कि जल्द ही क्या होना चाहिए। और फिर, श्लोक तीन में जिसका हमने अभी उल्लेख किया है, धन्य है वह जो भविष्यवाणी के शब्दों को जोर से पढ़ता है, और धन्य हैं वे जो इस भविष्यवाणी के शब्दों को सुनते हैं और इसमें लिखी बातों को मानते हैं क्योंकि समय निकट है।

तो, ये कथन संभवतः पूरी पुस्तक को संदर्भित करते हैं, न कि केवल एक या दो खंडों को, बल्कि प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक को, जिसमें पुस्तक के अंत में संदर्भ शामिल हैं, विशेष रूप से अध्याय 19 से 22 तक, उन घटनाओं के संदर्भ जो इतिहास के अंत में, मसीह के दूसरे आगमन पर घटित होंगी, मुझे लगता है। और इसलिए, हम यह सवाल पूछ सकते हैं कि किस अर्थ में प्रकाशितवाक्य की विषय-वस्तु निकट है? किस अर्थ में वे जल्द ही घटित होने जा रही हैं? और फिर, यदि आप पुस्तक के बिल्कुल अंत में जाते हैं, अध्याय 22 में, नए यरूशलेम में नई सृष्टि के दर्शन के बाद, हमें पुस्तक को पढ़ने और यूहन्ना द्वारा देखे गए दर्शन के बाद पुस्तक पर प्रतिक्रिया करने के बारे में अधिक अंतिम निर्देश मिलते हैं। अध्याय 22 और पद सात में, यीशु स्वयं पुस्तक के अंत में बोलना शुरू करते हैं।

और वह कहता है, देखो, मैं जल्द ही आ रहा हूँ। धन्य है वह जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी के शब्दों को मानता है, जो कि हम अध्याय एक में पढ़ते हैं। तो, यीशु, देखो, मैं जल्द ही आ रहा हूँ।

फिर, पद 12 में, वह दोहराता है, "देख, मैं शीघ्र आ रहा हूँ, और मेरा प्रतिफल मेरे साथ है।" और फिर, अंततः, पुस्तक के अंत में, पद 20 में, यीशु एक बार फिर बोलता है; यूहन्ना उसे यह कहकर परिचय देता है कि जो इन बातों के विषय में गवाही देता है, वह कहता है, हाँ, मैं शीघ्र आ रहा हूँ। इस प्रकार, पुस्तक के अंत में तीन बार, यीशु वादा करता है कि वह शीघ्र आ रहा है।

तो, आपके पास ये कथन हैं कि पुस्तक की विषय-वस्तु निकट है, कि वे जल्द ही घटित होने वाली हैं, ऐसी चीजें जो जल्द ही घटित होने वाली हैं। और फिर यह कम से कम तीन बार यीशु के इस वादे के साथ समाप्त होता है कि वह जल्द ही आ रहा है। तो निश्चित रूप से, यूहन्ना ने सोचा कि अंत होने वाला है, दुनिया का अंत, और मसीह का आगमन उसके जीवनकाल में, पहली शताब्दी के भीतर होगा।

लेकिन 2000 साल बाद, हम अभी भी यहाँ हैं। तो जाहिर है जॉन गलत था। जॉन खुद और संभवतः उसके पाठक अगली सदी में इस दुनिया से चले गए और जॉन गलत था।

हालाँकि, मुझे लगता है कि हमें फिर से यह देखने की ज़रूरत है कि हम रहस्योद्घाटन के संदर्भ में इन कथनों को कैसे समझते हैं और यह किस तरह के साहित्य के संदर्भ में चल रहा है। हमें इन घटनाओं की शीघ्रता और निकटता और मसीह की शीघ्र वापसी के वादों के बारे में इन कथनों को कैसे समझना चाहिए? इसे देखने का एक तरीका कुछ अन्य शीघ्रता ग्रंथों या ग्रंथों के समान स्पष्टीकरण के साथ होगा जो शेष नए नियम में मसीह की वापसी का वादा करते प्रतीत होते हैं और वह यह है कि यूहन्ना वास्तव में 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश का उल्लेख कर रहा है। अब यह पूरी तरह से संभव नहीं है।

मुझे लगता है कि रहस्योद्घाटन के बारे में बहुत कुछ देखना सही है, फिर से दूर क्षितिज में किसी दूर के भविष्य की भविष्यवाणी नहीं करना, 20वीं, 21वीं सदी या उसके बाद जैसे पहली सदी के पाठकों के क्षितिज से परे, लेकिन यह पुस्तक प्रासंगिक है और पाठकों के जीवनकाल में पहले से ही घटित घटनाओं का उल्लेख कर रही है। अब, जाहिर है, इसे 70 ई. में हुई घटनाओं के संदर्भ के रूप में लेना इसके साथ दो मुद्दे हैं। पहला, यह मानता है कि रहस्योद्घाटन नीरो के शासनकाल के दौरान काफी पहले लिखा गया था, 60 के दशक में, क्योंकि इसे 70 ई. में यरूशलेम के नष्ट होने से पहले लिखा जाना चाहिए था।

इसलिए, यह रहस्योद्घाटन की एक पुरानी तारीख मानता है। बिना किसी तर्क के, मुझे लगता है कि विद्वानों के बीच अधिक लोकप्रिय आम सहमति सही है कि रहस्योद्घाटन शायद बाद में लिखा गया था, शायद सम्राट डोमिनियन के जीवनकाल के दौरान, यानी पहली शताब्दी के अंत में, 95 से 96 ईस्वी तक, सबसे आम समाधान। इसलिए सबसे अधिक संभावना है कि रहस्योद्घाटन 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश के बाद लिखा गया था।

इसलिए, अगर ऐसा है, तो यह असंभव है कि यूहन्ना यह कहते हुए कि, मैं जल्द ही आ रहा हूँ, 80 ई. में यरूशलेम के विनाश का उल्लेख कर रहा है। दूसरी बात यह है कि जब आप अध्याय 19 से 22 और प्रकाशितवाक्य में कुछ अन्य स्थानों को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि वे मसीह के दूसरे आगमन का वर्णन करते हैं, न कि यरूशलेम पर उसके आने और न्याय का। इसलिए, मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि प्रकाशितवाक्य, ये सभी पाठ जो निकटता और शीघ्रता का उल्लेख करते हैं, वे 70 ई. में यरूशलेम के विनाश का उल्लेख कर रहे हैं।

वे उन घटनाओं का उल्लेख करते हैं, क्योंकि अंत समय का उद्घाटन पहले ही हो चुका है, ऐसी घटनाएँ हैं जो पहली सदी में पहले से ही हो रही हैं और होने वाली नहीं हैं। इस अर्थ में, वे घटनाएँ जल्द ही होने वाली हैं। लेकिन यह मसीह के दूसरे आगमन को भी संदर्भित करता है, ऐसी घटनाएँ जिनके बारे में हम पढ़ते हैं, खासकर अध्याय 19 और 22 में।

किस अर्थ में वे शीघ्र हैं? कुछ लोगों ने यह कहकर इसका समाधान किया है कि भाषा, शब्द शीघ्र, का अनुवाद शीघ्र किया जा सकता है। और विचार यह नहीं है कि मसीह तुरन्त वापस आने वाला है, बल्कि जब वह वापस आएगा, तो यह शीघ्र होगा। यह भी संभव है।

हालाँकि मुझे लगता है कि ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद जल्द ही किया गया है, या जिसका अनुवाद जल्दी किया जा सकता है, उसका अनुवाद जल्द ही करना बेहतर है। मेरे लिए, यह

कहना समझ में नहीं आता कि क्या जॉन इस बात पर जोर दे रहा है कि यीशु धीरे-धीरे वापस आने के बजाय जल्दी वापस आने वाला है, जो इसके विपरीत होगा। मुझे बस ऐसा लगता है कि जल्द ही की भाषा एक बेहतर अनुवाद है, जिसका अधिकांश अंग्रेजी अनुवाद इस ग्रीक शब्द का अनुवाद करने के इसी तरीके का अनुसरण करते हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि प्रकाशितवाक्य यह वादा कर रहा है कि मसीह के दूसरे आगमन सहित ये घटनाएँ जल्द ही होंगी, खासकर अध्याय 22, श्लोक 7, 12 और 20 में, जहाँ मसीह स्वयं कहते हैं, मैं जल्द ही आ रहा हूँ, यही सही अनुवाद है। तो, दूसरा विकल्प क्या है? मुझे लगता है कि इन श्लोकों को वास्तव में यह वादा करने के रूप में लेना उचित है कि मसीह जल्द ही वापस आने वाला है। यानी, मुझे लगता है कि यूहन्ना वही दृष्टिकोण साझा कर रहा है जो हमने अन्य नए नियम के लेखकों में देखा है।

सुसमाचारों में यीशु के साथ, पौलुस द्वारा मसीह के शीघ्र वापस आने की आशा के साथ, 1 यूहन्ना में याकूब और पतरस और यूहन्ना के साथ, उन सभी ने समय को परिप्रेक्ष्य से देखा और समझा कि वे पहले से ही अंत में रह रहे थे। वे पहले से ही अंत के समय में थे क्योंकि मसीह के पहले आगमन ने अंत का उद्घाटन किया था। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ने पहले से ही अंत के समय का उद्घाटन किया था, इसलिए यूहन्ना को यकीन था कि वह पहले से ही अंत में रह रहा था।

इसलिए, वह ऐसी बातें कह सकता था, समय निकट है, ये चीजें जल्द ही होंगी, वे पहले से ही होने लगी हैं, और केवल एक चीज बची है कि अंतिम परिणति इतिहास में टूट जाए और चीजों को उनकी परिणति तक ले जाए। इसलिए, मसीह किसी भी समय वापस आ सकता है। उसका आना वास्तव में जल्द ही था।

इसलिए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि उदाहरण के लिए, अध्याय 22 में जॉन और यीशु के कथन अंत की भविष्यवाणी नहीं हैं। वे अंत की भविष्यवाणी नहीं करते हैं, और फिर वे गलत और गलत हैं। इसके बजाय, वे उसी दृष्टिकोण को साझा कर रहे हैं जिसे हमने पूरे नए नियम में देखा है, कि अंत पहले ही शुरू हो चुका है और इसलिए, इसका समापन और समापन बहुत जल्द हो सकता है, यहां तक कि जॉन और पाठक के जीवनकाल के भीतर, जॉन की भविष्यवाणी के बिना कि यह आवश्यक रूप से उस तरह से होगा।

हम थोड़ी देर में देखेंगे कि यह दृष्टिकोण प्रकाशितवाक्य में दूसरे दृष्टिकोण के साथ संतुलित है जो इस मुद्दे को समझने और पुस्तक को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। पहचानने वाली दूसरी बात यह है कि, नए नियम के अन्य लेखकों की तरह, यूहन्ना अपने पाठकों में नैतिक तात्कालिकता पैदा करने के लिए इस दृष्टिकोण का उपयोग करता है। फिर से, यूहन्ना अंत समय की भविष्यवाणी करने या अंत के कितने करीब हो सकते हैं, इस बारे में कोई दिलचस्पी नहीं रखता है।

यूहन्ना अपने पाठकों में नैतिक तात्कालिकता पैदा करने के लिए मसीह की शीघ्र वापसी के इस दृष्टिकोण का उपयोग करता है। रोमन साम्राज्य के संदर्भ में रहने वाले पाठक, जो पाठक यीशु

मसीह में अपने विश्वास से समझौता करने और रोम के प्रति निष्ठा दिखाने के लिए लुभाए जाते हैं, यूहन्ना उन्हें इसका विरोध करने, आज्ञाकारिता में यीशु मसीह का अनुसरण करने, केवल परमेश्वर और मेमने की आराधना करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास कर रहा है, चाहे परिणाम कुछ भी हों। और तात्कालिकता का एक हिस्सा यह है कि वे पहले से ही अंत में रह रहे हैं।

अंत का उद्घाटन पहले ही हो चुका है, इसलिए मसीह किसी भी समय वापस आकर इसे समाप्त कर सकते हैं और इसे निष्कर्ष पर पहुंचा सकते हैं। यह जल्द ही हो सकता है। यह उनके जीवनकाल में ही हो सकता है।

और इसलिए, उनके लिए समझौता करने के प्रलोभन का विरोध करना और इसके बजाय परमेश्वर और मेमने की आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया करना ज़रूरी है, चाहे इसके परिणाम कुछ भी हों। और इसलिए यह किसी भी भविष्यवाणी की कोशिश करने से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है कि अंत कितना करीब है या वे वास्तव में अंतिम पीढ़ी में रह रहे हैं या नहीं। यह जॉन की चिंता बिल्कुल नहीं है।

तो एक बार फिर, ये कथन, कम से कम प्रकाशितवाक्य के अध्याय एक और अध्याय 22 के अंत में, जो पूरे दर्शन को ढाँचा देते हैं, संकेत देते हैं कि उस दर्शन में उन घटनाओं को इस तरह नहीं देखा जाना चाहिए कि यूहन्ना भविष्यवाणी कर रहा है कि अंत तुरंत आने वाला है और फिर वह गलत और गलत था। इसके बजाय, उनका मतलब यह है कि वे घटनाएँ पाठकों में ज़िम्मेदारी से जीवन जीने की तत्परता पैदा करने के लिए हैं क्योंकि वे पहले से ही अंत में हैं। वे पहले से ही इन चीजों को पूरा होते हुए देखते हैं।

और एक दिन, हम मसीह के दूसरे आगमन के साथ एक निष्कर्ष पर पहुँचेंगे जो उनके जीवनकाल में भी हो सकता है, लेकिन वे बस नहीं जानते। हम इसे फिर से देखेंगे, प्रकाशितवाक्य इस दृष्टिकोण को दूसरे दृष्टिकोण से संतुलित करने जा रहा है जिसे हम बस एक पल में देखेंगे। इसलिए, यूहन्ना यह भविष्यवाणी नहीं करता है कि अंत उसके जीवनकाल में आएगा।

मसीह अपने जीवनकाल में वापस आने वाला है, और फिर बेचारा जॉन गलत था। लेकिन मुझे नहीं लगता कि जॉन को यह भविष्यवाणी करने में कोई दिलचस्पी है कि अंत कब वापस आने वाला है, बल्कि वह अपने पाठकों को यह याद दिलाना चाहता है कि उन्हें अपनी स्थिति को कैसे देखना चाहिए और उन्हें समय को इस तथ्य के परिप्रेक्ष्य से कैसे देखना चाहिए कि वे पहले से ही अंत में हैं और फिर जीवन को उचित तरीके से जीना चाहिए और यीशु का अनुसरण करके एक जिम्मेदार तरीके से प्रतिक्रिया करनी चाहिए, चाहे इसके लिए उन्हें कुछ भी कीमत चुकानी पड़े। मैं प्रकाशितवाक्य में इस विषय से संबंधित कुछ अन्य अंशों को देखना चाहता हूँ, जिन्हें मैं बहुत संक्षेप में देखना चाहता हूँ, जो अध्याय दो और तीन में सात पत्रों या सात संदेशों में पाए जाते हैं, जो अधिक सटीक रूप से उन सात ऐतिहासिक कलीसियाओं के लिए हैं जिन्हें जॉन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में संबोधित कर रहे हैं।

अध्याय दो और तीन में, हमें कई कथन मिलते हैं जो मसीह की जल्द वापसी का भी उल्लेख करते हैं जिन्हें इसी तरह यूहन्ना की भविष्यवाणियों के रूप में लिया जा सकता है कि मसीह इन सात

कलीसियाओं के जीवनकाल में वापस आने वाला था और फिर, बेशक, यूहन्ना गलत था क्योंकि यीशु वापस नहीं आया। तो, क्या यूहन्ना गलत था? उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य अध्याय दो और पद 16 में, पिरगमुन की कलीसिया को लिखे पत्र में, वह कहता है, जिस तरह से मैं पद 15 पढ़ रहा हूँ, उसी तरह से तुम्हारे पास भी ऐसे लोग हैं जो नीकुलइयों की शिक्षा को मानते हैं। इसलिए, पश्चाताप करो अन्यथा मैं जल्दी या जल्द ही तुम्हारे पास आऊँगा और अपने मुँह की तलवार से उनके खिलाफ लड़ूँगा।

इस ऐतिहासिक चर्च में जल्द ही मसीह के आने की भाषा पर ध्यान दें। अध्याय तीन और पद 11, मैं इसे भी पढ़ूँगा। अध्याय तीन और पद 11, फिलाडेल्फिया के चर्च को लिखा गया पत्र।

यीशु कहते हैं, मैं जल्द ही आ रहा हूँ। जो तुम्हारे पास है उसे थामे रहो ताकि कोई तुम्हारा मुकुट न छीन ले। पहला, अध्याय दो, पद 16, क्या यूहन्ना एक ऐसे अंत की भविष्यवाणी कर रहा है जो कभी नहीं आया? खैर, जब वह वादा करता है कि मसीह जल्द ही आ रहा है, तो यूहन्ना वास्तव में यीशु के शब्दों को उद्धृत कर रहा है।

तो, यूहन्ना द्वारा यीशु के शब्दों को उद्धृत करते हुए कि मसीह जल्द ही आ रहा है, वह क्या भविष्यवाणी कर रहा है? इन दोनों आयतों को समझने के लिए दो विकल्प हैं। पहला यह है कि ये दोनों आयतें इतिहास में मसीह के न्याय के लिए कलीसिया में आने का उल्लेख कर सकती हैं। यह वास्तव में पहली सदी में हुआ था, ऐसा नहीं कि वह प्रत्यक्ष रूप से प्रकट हुआ था, बल्कि मसीह कलीसिया पर न्याय करने के लिए आया था और उनकी आज्ञाकारिता की कमी और उनकी बेवफ़ाई के कारण पश्चाताप करने में उनकी विफलता के कारण उन पर न्याय लाया था।

यह बात विशेष रूप से अध्याय दो और पद 16 के लिए उपयुक्त प्रतीत होती है, जब वह उन्हें पश्चाताप करने के लिए कहता है क्योंकि वह निकोलायतों के विरुद्ध लड़ने के लिए आने वाला है, चाहे वे कोई भी हों, संभवतः एक ऐसा समूह जो चर्च को रोम के साथ समझौता करने के लिए प्रेरित कर रहा है और कह रहा है, ठीक है, आप एक ही समय में यीशु मसीह और रोमन साम्राज्य के प्रति वफादार हो सकते हैं। और अब यीशु अपने मुँह से निकलने वाली तलवार से न्याय करने का वादा करता है। इसलिए, यह संभव है कि अध्याय दो, पद 16 वास्तव में मसीह के ऐतिहासिक रूप से चर्च में आने और रोम के विरुद्ध खड़े होने में विफल रहने और समझौता करने से इनकार करने और केवल यीशु मसीह का अनुसरण करने और निकोलायतों की बात सुनने के कारण उन पर न्याय लाने का उल्लेख कर रहा हो, यह समूह जो समझौते को बढ़ावा दे रहा है।

मुझे लगता है कि अध्याय तीन, श्लोक 11 को पहली सदी तक सीमित करना थोड़ा मुश्किल है। यह ठीक वैसी ही भाषा को दर्शाता है जैसी आपको अध्याय 22 के अंत में मिलती है, जहाँ अध्याय 22 के श्लोक 7, 12 और 20 में, मसीह स्वयं वादा करता है, मैं जल्द ही आ रहा हूँ। अब अध्याय तीन, श्लोक 11 में, आप वही भाषा देखते हैं।

मैं जल्द ही आ रहा हूँ। जो तुम्हारे पास है उसे थामे रहो ताकि कोई तुम्हारा ताज न छीन ले। शायद यह अंतिम समय के इनाम का संदर्भ है जो परमेश्वर अपने लोगों को देगा।

वास्तव में, अध्याय तीन की अगली आयत, आयत 12, जो जीतेगा, मैं उसे अपने परमेश्वर के मंदिर में एक स्तंभ बनाऊँगा, जो प्रकाशितवाक्य के अध्याय 21, नई सृष्टि, नए यरूशलेम दर्शन का संदर्भ है। तो, संभवतः, आयत 11 अंत समय, इतिहास के अंत में यीशु मसीह के दूसरे आगमन का उल्लेख कर रही है। लेकिन क्या यूहन्ना एक ऐसे अंत की भविष्यवाणी कर रहा है जो कभी नहीं आया, और इसलिए, वह गलत था? नहीं।

इसके बजाय, मुझे लगता है कि हमें इस आयत को उसी तरह से समझने की ज़रूरत है जिस तरह से हमने अध्याय 22 और आयत 7, 12, और 20 में उन आयतों को समझा था और प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब में जल्दबाज़ी या निकटता के दूसरे संदर्भों को भी। एक बार फिर, यह इस तथ्य के परिप्रेक्ष्य को मानता है कि यूहन्ना और उसके पाठक पहले से ही अंत में रह रहे थे, इसलिए उन्हें उम्मीद थी कि मसीह जल्द ही वापस आएँगे। वह किसी भी समय वापस आ सकता था।

ऐसा नहीं है कि यूहन्ना कह रहा है कि वह अवश्य ही आएगा। यूहन्ना यह भविष्यवाणी नहीं कर रहा है कि मसीह उनके जीवनकाल में वापस आएगा, बल्कि इस तथ्य को प्रतिबिंबित कर रहा है कि वह निश्चित रूप से किसी भी क्षण वापस आ सकता है और जल्द ही वापस आ सकता है क्योंकि वे पहले से ही अंत के समय में रह रहे हैं। और एक बार फिर, इन दोनों ग्रंथों को, चाहे हम उन्हें कैसे भी लें, चाहे वे मसीह के प्रथम शताब्दी में न्याय के समय आने या इतिहास के अंत में अपने दूसरे आगमन का उल्लेख कर रहे हों, जो मुझे लगता है कि कम से कम अध्याय तीन, श्लोक 11 को उसी तरह लिया जाना चाहिए।

मुद्रा चाहे जो भी हो, हमें यह भी समझना होगा कि ये दोनों ही बातें नैतिक उपदेश के संदर्भ में हैं। फिर से, यूहन्ना अपने पाठकों के लिए यह भविष्यवाणी करने की कोशिश नहीं कर रहा है कि वे अंत के कितने करीब हैं। वह यह भविष्यवाणी करने में दिलचस्पी नहीं रखता कि मसीह कब वापस आने वाला है।

लेकिन एक बार फिर, वह इन चर्चों को रोम के साथ समझौता करने से मना करने और मसीह और मेम्ने का आज्ञाकारिता में अनुसरण करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश कर रहा है, चाहे इसके परिणाम कुछ भी हों। एक और आयत जिसे हम देख सकते हैं वह है अध्याय दो और आयत 25, जहाँ भाषा थोड़ी अलग है, लेकिन अब, थुआतीरा में चर्च को लिखे पत्र में, वह कहता है, जब तक मैं न आऊँ, तब तक केवल वही थामे रहो जो तुम्हारे पास है। यदि आप वापस जाएँ और आयत 24 को पढ़ें, तो यूहन्ना ने यीशु के शब्दों को रिकॉर्ड करते हुए कहा, मैं थुआतीरा में तुम में से बाकी लोगों से कहता हूँ जो इस शिक्षा को नहीं मानते, जिन्होंने शैतान के तथाकथित रहस्यों को नहीं जाना है।

फिर से, शिक्षा शायद यह है कि वे रोम के साथ समझौता कर सकते हैं। वे रोम की आज्ञा मान सकते हैं और फिर भी यीशु मसीह के प्रति अपनी वफ़ादारी बनाए रख सकते हैं। और अब यूहन्ना थुआतीरा में कुछ लोगों को अलग करता है जिन्होंने ऐसा नहीं किया है।

और अब वह उन्हें पद 25 में बताता है, जब तक मैं न आऊँ, तब तक जो तुम्हारे पास है उसे थामे रहो। अब, क्या यह फिर से मसीह के दूसरे आगमन का संदर्भ है? क्या यह पहली सदी में थुआतीरा और उन लोगों पर न्याय करने के लिए मसीह के आने का संदर्भ है जो विश्वासघाती हैं? फिर से, मुझे लगता है कि इनमें से कोई भी एक, इसे एक असफल भविष्यवाणी के रूप में लेने से बेहतर है। लेकिन अगर यह मसीह के दूसरे आगमन का उल्लेख कर रहा है, तो एक बार फिर, मुझे लगता है कि हमें इसे उसी दृष्टिकोण से लेने की आवश्यकता है जैसे कि दूसरे पाठ में मसीह के अपने चर्च में जल्द ही लौटने का वादा किया गया था।

और वह यह है कि यीशु किसी भी समय वापस आ सकते हैं। चूँकि वे पहले से ही अंतिम समय में रह रहे हैं, इसलिए मसीह के जल्द ही वापस आने की उम्मीद है। मसीह किसी भी समय इतिहास को समाप्त करने और न्याय करने, न्याय करने, लेकिन अपने लोगों को इनाम देने के लिए वापस आ सकते हैं जो वफादार हैं।

तो, इन पाठों और प्रकाशितवाक्य के निष्कर्ष में, मुझे लगता है कि हम देख सकते हैं कि यूहन्ना इस उम्मीद के साथ जी रहा है कि मसीह किसी भी समय वापस आ सकता है। यूहन्ना मसीह के जल्द ही वापस आने की उम्मीद के साथ जी रहा है क्योंकि वह पहले से ही अंत में जी रहा है। अंत का उद्घाटन पहले ही हो चुका है।

परमेश्वर के लोग उस दिन से पहले ही याजकों का राज्य बन चुके हैं जब वे प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में नई सृष्टि में उसके याजकों का राज्य बनेंगे। अंत पहले ही आ चुका है। मसीह उस अंतिम दिन से पहले ही राजा के रूप में शासन कर रहा है।

इसलिए, वे पहले से ही अंत में जी रहे हैं और वे बस मसीह के आने का इंतज़ार कर रहे हैं ताकि इतिहास को उसकी पूर्णता तक पहुँचाया जा सके और अभी तक नहीं आए अंतिम न्याय और उद्धार को लाया जा सके जिसकी वे उम्मीद कर रहे हैं। उस दृष्टिकोण से, जॉन कह सकता है कि मसीह जल्द ही आ रहा है। वह किसी भी समय वापस आ सकता है।

और उन्हें उस दृष्टिकोण से जीने की ज़रूरत है। उन्हें ईमानदारी से जीने, यीशु मसीह का अनुसरण करने और यीशु मसीह के व्यक्तित्व के लिए अपनी वफ़ादार गवाही को बनाए रखने और रोम के साथ समझौता करने से इनकार करके इसके लिए तैयार रहने की ज़रूरत है। यूहन्ना को अंत की भविष्यवाणी करने में कोई दिलचस्पी नहीं है।

जॉन को हमारे कुछ आधुनिक समय के भविष्यवाणी प्रचारकों की तरह यह भविष्यवाणी करने में कोई दिलचस्पी नहीं है कि मसीह कब वापस आएगा या उसका आगमन कितना निकट है या वह कितनी जल्दी वापस आएगा। लेकिन बस इतना कि मसीह वापस आएगा और वे पहले से ही अंत में जी रहे हैं और मसीह किसी भी समय वापस आ सकता है और इससे परमेश्वर के लोगों को दुनिया और उसकी बुरी व्यवस्था के साथ समझौता करने से इंकार करने और इसके बजाय यीशु मसीह के प्रति अपनी वफ़ादारी बनाए रखने के लिए प्रेरित होना चाहिए, चाहे इसके परिणाम कुछ भी हों। इसलिए मुझे लगता है कि उस दृष्टिकोण से, प्रकाशितवाक्य मसीह के आगमन की शीघ्रता या निकटता पर अन्य नए नियम के ग्रंथों के समान दृष्टिकोण साझा करता है।

अब, अगले और अंतिम व्याख्यान में हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक और विषय या एक और सूत्र उठाएंगे जो इस विषय को संतुलित करेगा। यदि हमने कई ग्रंथों को देखा है जो मसीह के आगमन और प्रकाशितवाक्य में इन घटनाओं की शीघ्रता या निकटता को इंगित करते हैं, तो ऐसे कई अन्य ग्रंथ हैं जो देरी की संभावना पर जोर देते हैं जो आसन्नता पर जोर को संतुलित करते हैं। इसलिए हम आसन्नता और विलंब दोनों को देखने जा रहे हैं।

हमने 2 पतरस जैसे अन्य नए नियम के ग्रंथों में, 2 थिस्सलुनीकियों में थोड़ा बहुत, यहाँ तक कि यीशु के दृष्टान्तों में से एक, मत्ती 25 में 10 युवतियों के दृष्टान्त में भी देरी के विषय को देखा है। लेकिन प्रकाशितवाक्य देरी की संभावना पर और भी अधिक जोर देने जा रहा है, जिससे यह और भी अधिक असंभव हो जाता है कि यूहन्ना अंत की भविष्यवाणी कर रहा था और फिर गलत हो गया। और फिर हम कुछ नए नियम के ग्रंथों में पारूसिया की देरी के कुछ धार्मिक और पादरी निहितार्थों पर कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करके अपनी चर्चा को समाप्त करेंगे, जिन्हें हमने देखा है।